वेदों की खुशबू

ओ३म्
(धर्म मर्यादा फैलाकर लाभ दें संसार को)

वेद सब के लिए

# VEDIC THOUGHTS

A Perfect Blend of Vedic Values and Modern Thinking

| Monthly Magazine | Issue 79 | Year 8 | Volume 4 | January 2019 Chandigarh | Page 24 | मासिक पत्रिका Subscription Cost Annual-Rs. 120- see page 6 |
|---|---|---|---|---|---|---|

## आओ प्यार करें, प्यार बांटने की चीज़ है

उपनिशद में कहा है. ––जो व्यकित स्वयं को दूसरों में देखता है व दूसरों को अपने में अनुभव करता है वह किसी से भी धृणा नहीं कर सकता। और जब घृणा नहीं है तो हृदय में प्यार स्वयं ही पैदा होता है।

हम सब को पता है कि महर्षि दयाानन्द सरस्वती को उनके रसोईये ने कुछ ऐसे लोगों के बहकावे में आकर जहर दे दिया जो कि अपने स्वाथ्रे के लिये हिन्दु धर्म में महर्षि दयाानन्द सरस्वती द्वारा लाये जा रहे सुधारों के विरूध थे। परन्तु महर्षि दयाानन्द सरस्वती ने न केवल उस रसोईये को क्षमा कर दिया परन्तु उसे वहां से भाग जाने में सहायता भी की। साधारण व्यकित इसे सुन कर न केवल हैरान होगा पर शायद विश्वास भी न करे कि कोई व्यक्ति कैसे अपने ही हत्यारे को न केवल क्षमा करता है बल्कि उस के लिये उस के दिल में करूणा भाव भी है।

हां आप सही हैं कि हर कोई व्यक्ति ऐसा नहीं कर सकता। यह वही कर सकता है जिसने महर्षि दयाानन्द सरस्वती की तरह योगाभ्यास द्वारा यम और नियम के पालन से मन से हर तरह की मैल को दूर कर दिया हो। ऐसा व्यकित स्वयं को दूसरों में देखता है व दूसरों को अपने में अनभव करता है। ऐसे में धृणा का स्थान नही रहता, बदले की भावना खत्म हो जाती है। और जब हृदय में घृणा नहीं है तो हृदय में प्यार व करूणा स्वयं ही पैदा होती है। धृणा किसी भी नाली में फसे उस पत्थर की तरह है जो की पानी को बहने नहीं देता। जैसे ही धृणा रूपी पत्थर को हटाया जाये, प्यार का पानी निरविरोध बहने लगता है।

जैसे ईश्वर प्रेम स्वरूप है वैसे ही ईश्वर ने मनुष्य को भी प्रेम स्वरूप बनाया है यह अलग बात है मनुष्य जब संसार के प्रलोभनो व मन की बृतियों में में बहकर स्वयं को ईश्वर से अलग कर लेता है तो उसमें कई बुराईयां घर करने लगती है

Contact :
BHARTENDU SOOD
Editor, Publisher & Printer
# 231, Sec. 45-A, Chandigarh-160047
Tel.: 0172-2662870, Mob.: +91-9217970381
E-mail : bhartsood@yahoo.co.in



POSTAL REGN. NO. G/CHD/0154/2016-2018

जिस में घृणा भी एक है। अर्थात सूर्य रूपी प्रेम को बादल रूपी घृणा के बादल घेर लेते हैं। यह बादल छट भी जाते हैं जब मनुष्य फिर से ईश्वर के नजदीक आ जाता है। ईश्वर के नजदीक आते ही ईश्वरीय गुण––प्यार, करूणा फिर से लौट जाते हैं।

जिस प्रकार प्रकाश से अन्धेरा दूर होता है, उसी प्रकार प्यार से धृणा का खातमा होता है। जैसे अन्धकार अन्धकार द्वारा खत्म नहीं कर सकता उसी तरह धृणा घृणा को नष्ट नहीं कर सकती। प्यार प्रकाश की तरह है व घृणा अन्धेरे के सामान है। जिस के अन्दर घृणा है वह अन्धकार ही फैला सकता है व जिस के अन्दर दूसरों के लिये प्यार है वह सब को प्रदिप्त करता है, रोशनी प्रदान करता है।

यक दार्शनिक के अनुसार–––बजाये इसके कि हम यह कहें कि अपनी घृणा व क्रोध पर काबू पाओ उससे कहीं अच्छा है हम यह कहें कि सब से प्यार करों जब हम प्यार करेंगे तो घृणा व कोध वैसे ही खत्म हो जायेंगे जैसे दीपक के आने ही अन्धकार खत्म हो जाता है।

व्यक्ति प्यार तभी कर सकता है जब वह दूसरे व्यक्ति से कोई ईच्छा या अपेक्षा न करता हो और उससे कुछ पाने के स्थान पर उसे कुछ देना ही चाहता हो। प्यार बिना कुछ ईच्छा किये बांटने की चीज है। जो व्यकित प्यार पाने का ईच्छुक रहता है वह दुखी रहता है और जो प्यार देना ही अपना जीवन का रास्ता बना लेता है वह सुखी रहता है।

अथर्ववेद में कहा है अन्यो अन्यमभि हर्यम वत्सं जातमिवाहन्या । एक दूसरे के साथ ऐसा प्रेम करें जैसे गाय अपने नवजात बछड़े के साथ करती है हमारा प्यार बिल्कुल निष्कपट, निःस्वार्थ भाव से पूर्ण समर्पण के साथ होना चाहिए । प्यार में कोई स्वार्थ की भावना, शर्त वा पूर्वाग्रह नहीं हो सकती अगर है तो वह प्यार नहीं व्यापार है ।

प्यार व करूणा पाने की इच्छा करना कमज़ोर व्यक्ति की निशानी है जब की शक्तिशाली सदैव देना चाहता है। ऐसी शकित निराकार अजन्मा सर्वशक्तिमान परमान्मा की उपासना द्वारा ही सम्भव है।

बहुत सत्य कहा है–– जिसके मन में प्रेम की हिलोरे नहीं उठती वह मृतक के समान है । वेद में मित्रास्य चक्षुषा समीक्षामहे कहकर हम सभी को परस्पर एक दूसरे को मित्र की दृष्टि से देखने का आदेश दिया और मित्रता का भाव रखने के लिए परस्पर प्रेम अनिवार्य शर्त है । स्वामी राम तीर्थ के जीवन की यह घटना बताती है कि दूसरों के प्रति प्रेम भाव कैसे दूसरे व्यक्ति को भी अपनी और खींच लेता है। स्वामी राम तीर्थ जो अपने समय के एक महान विद्वान थे, उन्होने उन्नीस्वीं सदी के अन्तिम दशक मे अमेरिका यात्रा करने का फैसला किया हालां कि न उनके पास धन था और न ही वह किसी को जानते थे

एक लम्बी समुद्री यात्रा के बाद वह अमेरिका पहुचें जहां बहुत से अमेरिकी अपने मित्रों और सम्बन्धीयो को लेने आये थे। कुछ देर बाइ जब सब प्रस्थान कर गये तो ऐसी हालत में स्वामी राम तीर्थ ने खुद को बहुत अकेला महसूस किया। वहां

उन्हें इस हालत में देखकर एक अमेरिकन उनके पास आया व सहानुभूती के साथ बोला––––––क्या अमेरिका मे आप का कोइ मित्र नहीं?

स्वामी राम तीर्थ ने कुछ देर सोचा व फिर वोले–––हॉ एक दोस्त है और वह दोस्त हैं आप ओर यह कह कर उस अमेरिकन को गले लगा लिया ।

उस अमेरिकन ने ऐसे व्यवहार की उमीद न की थी। वह बहुत प्रभावित हुआ व बोला हां मैं आपका मित्र हूं औ वह स्वामी राम तीर्थ को अपने धर ले गया औ वह जब तक अमेरिका मे रहे उस अमेरिकी ने उन्हे बहुत आदर के साथ रखा।

वेद कहते है कि हम सब को मित्रता की दृष्टी से देखे। कोइ भी आपके लिये अन्जान नहीं है सभी आपके मित्र बन सकते हैं। जरूरत इस बात की है कि हम सब के साथ प्रेम भाव रखें।

'ऋग्वेद में कहा है

सं गच्छध्वं सं वदध्व संवो मनांसि जानतामं।

देवा भागं यथा पूर्वे संजानाम उपासते

ऐ ऐश्वर्य के अभिलाषी मनुष्यो ! तुम आपस में मिलकर चलो, मिलकर रहो, प्रेम से बातचीत करो, तुम एक दूसरे से मन मिलाकर ज्ञान प्राप्त करो। जिस प्रकार हमारे पूर्वज विद्वान एक दूसरे से अनेक प्रकार का ज्ञान प्राप्त करते हुए ऐंश्वर्य और उन्नति प्राप्त करते थे, वैसे ही तुम भी करो।

# Formless and Unborn God

Bhartendu Sood

**As I understood Satyarth Prakash, Magnum opus of Maharishi Dayanand Saraswati**

The origin of Hinduism is the vedas that speak of one God,who is formless and unborn.Anyone who takes birth and lives the life of a human being,is a doer of actions, good or bad, and so cannot be God. Rig Veda says,"N tasay pratima asti yasay nam mahajsha — Neither He has an image nor can be formed."

Yajur Veda says:"O men,God existed in the beginning of Creation. He is the creator, support and the sustainer of the sun and other luminous worlds.He was the lord of past creation.He is lord of the present.

He will be lord of all future creations. He is eternal bliss.May we all praise and adore him as we do."The one who has such attributes is surely unborn and cannot be a human being.

But then,many raise the question,"If the vedas speak of one God then how come Hindus worship so many gods? This defies the concept of one God."

Well, for this, we need to understand that when we want to know or come close to somebody, it is natural that we look for his name or sometimes give him a name, generally based on his prominent quality.This applies to God also. But, since God's qualities, nature, attributes and activities are infinite,so He has infinite names and,generally, we call Him by the name that really connects us to Him. For example, when we are in trouble and seek his support, we call him Daata and Dayalu, one who is kind. Those who look to Him as a source of power,call Him Shakti.

Differentiating between devta and God, the vedas say whosoever possesses useful and brilliant qualities is adevta and the one who is sustainer of all devtas is the adorable God. This should dispel the myth among manypeople, especially in the west, that Hinduism speaks of countless gods. Rama, Krishna and all other great souls were devtas but not God, as God is one who is unborn.

**Countless Names**

In a nutshell, different people call Him by the attribute which is endearing to them. But, then calling Him by different names does not mean that He has different forms or that there are many gods. Further, he is called Shiva, being blissful and benefactor of all; as creator of the universe, he is called Brahma. Being all-pervading, he is called Vishnu. Being protector of all and all-powerful, many call him Indra. All glorious, some call him Agni.He illuminates this multiform universe,so many call him Virat. Hepunishes the wicked, so He is referred to as Rudra.This is why God has countless names, each name indicating an aspect of the Divine.

But, in the vedas and upanishads,God has been referred to mostly by the word Aum which is the holiest name of God. It is composed of three letters A, U and M. 'A' stands for virat,agni and vishwa. 'U' stands for Hiranyagrabha,Vayu and yajnas. 'M' stands for

# वर्तमान भारत के निर्माता स्वामी दयानन्द सरस्वती

डा सर्वपल्लि राधाकृष्णन, पूर्व राष्टपति व विचारक

आधुनिक भारत के निर्माताओं में स्वामी दयानन्द सरस्वती का प्रमुख स्थान है। जिस समय हमारे देश में अध्यात्मिक अन्धकार छाया हुआ था, जब हमारी बहुत सी सामाजिक मान्यतायें टूट रही थी, जब हम रूढ़ीवाद और अन्धविश्वास के शिकार थे, यह महान आत्मा सत्य में दृढ़ आस्था, समाजिक समानता की भावना और उत्साह लिये मैदान में उतरी और हमारे देश की धार्मिक, राजनैतिक समाजिक उन्नती और सांसकृतिक मुक्ति के लिये काम किया।

पहले धार्मिक पक्ष को लिजीये। स्वामी दयानन्द ने तर्क को महत्व दिया, जैसे कि उनकी इन बातों से जाहिर होता है–––––कुछ लोग नदियों, गंगा आदि की पूजा करते हैं, कुछ लोग सितारों की, कुछ लोग मिटटी और पत्थर की मूर्तियों की लेकिन बुद्धिमान व्यक्ति का परमात्मा उसके हृदय में वास करता है। परमात्मा को मानव की गूढ़तम गहराईयों में पाया जा सकता है।

यदि मृत्यु के पश्चात, निकट सम्बन्धी कितनी भी कोशिश कर ले पर कुछ पानी की बून्दें भी उसके उदर में नहीं पहुंचा सकते तो भला सोचिये 100 साल पहले मरे हुये व्यक्ति को खीर कैसे पहुंचेगी। साथ ही उन्होने ठीक रास्ता भी बतलाया––––हमें बजुर्गो का जीते जी ख्याल रखना चाहिये और उनकी सेवा करनी चाहिये, यही सच्चा श्राद्ध है।

उनका कहना था कि महज श्रद्धा के आधार पर कुछ भी स्वीकार न करें बल्कि जांचों, परखो और फिर निश्र्कश पर पहुंचे। डनहोने तर्क के आधार पर ही बताया कि एक सर्वोच सता है जिस पे यह व्रहमा।ड बनाया, सूर्य पृथवी धारण किये, सारा प्राणी जगत बनाया , प्राणियों को जीवन के साधन ––सूर्य का प्रकाश, वायु, जल, अग्नि आदि देकर प्राण देता है पालता है व रक्षा करता है उच्चतम स्थान जिस ईश्वर ने हमें मानव का चोला देकर जीवन के सब साधन दिये है उसकी स्तुती को दिया जो कि ध्यान और धारणा द्वारा ही सम्भव है। ईश्वर एक है जो कि अजन्मा, अनादि , अन्नत है, ईश्वर को कई रूपों में मानना और यह सोचना की वह कई रूपों में प्रगट हो सकता है या जन्म ने सकता है, केवल मनुष्य के अज्ञान को दरशाता है।

स्वामी दयानन्द की यह बात भी ठीक है कि जो ईश्वर सर्वज्ञ है उसका कोई ऐजैन्ट नहीं हो सकता। उनका वेदों का स्वरूप इस लिये मामने योग्य है क्योंकि उन्होने जनम के आधार पर जाति प्रथा को गलत ठहराया। उन्होने स्त्रीयों पर धर्म के आधार पर लगाये प्रतिबन्धों को गलत ठहराया। स्त्री और पुरूष की समानता को माना। प्रन्तु मैं स्वामी दयान्नद के इस विचार से सहमत नहीं हूं कि वेद त्रुटी रहित हैं। जो ज्ञान हजारों वर्ष पहले हमारे ऋिषियों के पास आया उस में समय के साथ त्रुटियां आना स्वभाविक ही है। यही वेदों के साथ भी हुआ। लोगों ने इसे अपने ढुग से पढ़ा और

जाना और जहां उनको कुछ अपने विरूध लगा उन्होने उस को बदल डाला। यह केवल वेदों के साथ ही नहीं, सभी धार्मिक पुस्तकों के साथ है और यही कारण है कि जो पुस्तकें शांति का व अच्छ मानविय व्यवहार का संदेश देने के लिये बनाई गई थी वे आज आपसी झगड़े का कारण बन गई है।

उन्होने धर्म को समाज की उस समय की स्थिती के साथ जोड़ा और धर्म का प्रयोग समाजिक अन्याय के साथ उछ़ने के लिये किया

स्वामी दयान्नद की शिक्षाओं का आज बहुत महत्व है, खास कर भारत के संदर्भ में जहां अभी भी अन्धविश्वास और रूढ़ीवाद प्रचण्ड रूप मे फैला हुआ है। उनके तर्क के सिद्धान्त को मानने से इस को दूर करने में सहायता मिल सकती है, परन्तु यह तभी सम्भव है यदि उनके द्वारा बनाये गये आर्य समाज के लोग, उन की शिक्षाओं को ठीक रू॰ से देख सके। बाकी मत मतरन्तरों की तरह कर्मकाण्ड को अगे बढ़ाने से ऋषि का किया हुआ कार्य खत्म हो जायेगा।


# पुस्तक

**( English book of short stories)**

सम्पादक व उनकी पत्नी नीला सूद ने अपनी लिखी व विभिन्न अंग्रेजी समाचार पत्रों में छपी 70 कहानियों का संग्रह एक पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया है जिसका नाम है Our musings। इसकी कीमत 150 रूपये है।

जो भी इसे लेने के इच्छुक हों वह मात्र 100 रूप्या भेज कर या हमारे किसी भी बैंक ऐकांउट( Bank Account) में पैसे डाल कर मंगवा सकते है। भेजने का खर्चा हमारा होगा। Account Nos वही हैं जो वैदिक थोटस पत्रिका के लिये है।

**मंगवाने से पहले निम्न बातों का कृपया ख्याल रखें**

**पुस्तक अंग्रेजी भाषा में है। Book is in English से जुड़ी है। Stories are on various aspects of human life.**

नीला सूद, भारतेन्दु सूद

**0172–2662870, 9217970381**

# प्रकाश औषधालय

थोक व परचून विक्रेता हमदर्द, डबार, वैद्यनाथ, गुरूकुल, कांगड़ी, कामधेनु जल व अन्य आर्युवैदिक व युनानी दवाईयाँ

Wholesaler & Retailer of :

HAMDARD, DABUR, BAIDHYANATH, GURUKUL KANGRI, KAMDHENU JAL & All kinds of Ayurvedic & Unani Medicines

Booth No. 65, Sector 20-D, Chandigarh

# क्या चीज आपको दूसरों से आगे ले जाती है

घनश्याम त्रिपाठी

अंग्रेजी भाषा मे एक शव्द है Excellence जिसका अर्थ है¨ an outstanding feature; something in which something or someone excels अर्थात क्या चीज आपको दूसरों से आगे ले जाती है। इसी तरह अंग्रेजी भाषा मे एक कहावत है । Nothing succeeds like success; and nothing fails like failure जिसका अर्थ है सफलता में दोश भी ढक जाते है और असफलता में गुण और आपके द्वारा किये प्रयत्न भी सामने नहीं आते। यह बहुत हद तक व्यवहारिक सत्य है, परन्तु जीवन व्यवहारिक सत्य से कहीं उपर है ।

दो रिसर्च करने वाले विद्यार्थी विश्वविद्यालय के भौतिक विज्ञान के विभाग में पी ऐच डी करने के लिये चुने गये। दोनों ने विषय का चुनाव कर लिया। पहले ने आसान विषय लेकर, लकीर का फकीर बन कर, जैसे उसका गाईड बताता था , काम करता गया व गाईड के साथ सम्बन्ध भी मधुर रखे । तीन साल में अपनी पी ऐच डी पूरी कर ली, और उसी विभाग में सहायक प्रोफैसर के पद पर रख लिया गया। समय के साथ आगें बड़ता गया और एक दिन उसी विभाग में अध्यक्ष बन गया।

दूसरा लकीर से हट कर कुछ अलग करना चाहता था, अलग ही विषय चुना, पांच साल हो गये पर वह अभी बीच में ही था। गाईड से भी उस के मत भेद रहते थे। उसे उस विश्वविद्यालय से जाना पड़ा परन्तु उस में कुछ अलग करने का संकल्प था, शोद्ध के लिये, उस के विषय को अमेरिका के एक विश्वविद्यालय में चुन लिया गया , जाने के लिये उसे आर्थिक सहायता भी उसी विश्वविद्यालय से मिल गई, उस ने जब अपनी पी ऐच डी कर के पेपर प्रकाशित किये तो विज्ञान जगत में उसकी पहचान बन गई और समय के साथ उसे कई ऐवार्ड मिले। दोनो विद्वार्थियों मे एक ही फर्क था। पहला किसी भी तरह व्यवसाईक सफलता चाहता था जब कि दूसरा कुछ नया करना चाहता था। जिसे हम अंग्रेजी भाषा मे एक शव्द है Excellence कहते हैं।

आज के समय में पहली श्रेणी में आने वालों की संख्या बहुत अधिक है, यूं कहे 99 प्रतिशत है। न तो हमारे में धैर्य है और न ही मुश्किल रास्ता अख्तयार करना चाहते है। किसी का किया हुआ काम मिल जाये तो उसी में निखार ला कर अपना कहने में विश्वास करते है। आज जब पैसा ही सब कुछ है तो Excellence के लिये स्थान नहीं रह गया हैं।

आज हमारे शिक्षा संस्थानों का स्तर बहुत अधिक गिर गया है, जिम्मेवार अध्यापक ही नहीं माता पिता अधिक है , जो कि बच्चे को ध्यान से पढ़ने ही नहीं देते। 10वीं के बाद स्कूल नाम के लिये है, अधिक कोचिंग सैंटरों में ही समय बिताते हैं। यही हाल विश्वविद्यालयों का है। जब विघार्थी ध्यान से पढ़ते ही नही ंतो Excellence कहां से आयेगीं। एक ही समय में बहुत सारे काम करने का रिवाज हो गया है, जिस में Excellence का कोई भी स्कोप नहीं रह गया हैं। बच्चा पढ़ रहा तो ईजनियरिंग है और साथ में तैयारी कर रहा किसी मैनेजमैंट कालेज में जाने की, ऐसा करते चाहे ईजनियरिंग में उस की रीपेयर आ रही है, जो कि अक्सर होता है।

आज शिक्षा का भारत में बहुत विस्तार हो चुका है। पिछने 40 साल में पढे लिखों की संख्या के आंकड़े स्कूल स्तर तक दुगने और विश्वविद्यालय स्तर तक चार गुणा हो चुके ह, पर मजे की बात यह है कि भारत के जो भी नोवेल पुरस्कार जीतने वाले हैं वे सभी 40 साल पहले के ही हैं। क्यों हैं ऐसा ? इसका एक ही जवाब है कि हमने Excellence को कोई महत्व नहीं दिया है। शिक्षा को आंकने का एक ही साधन है–––आपका पैकेज कितना है, शिक्षा संसथानों का मूल्यांकन करने का एक ही माप दंड है––––कितनों का पलेसमैंट हुआ और सब से अधिक वेतन package क्या मिला

समय की आवश्यकता यह है कि बच्चे को हर समय पक्का पकाया खाने की आदत न डाल, उसे चिन्तन और मनन करने दें, यदि वह ऐसा रास्ता अख्तयार करना चाहता है जो दूसरों ने नहीं अख्तयार किया तो करने दें, उसके रास्तें में जो मुश्किलें आती हैं उनका सामना उसे खुद करते दें, ताकी वह निर्भयता से चलना सीखे। जो रूकावटें हैं उन्हें अवसरों में बदलने दें। ऐसे मार्ग पर चलते हुये वह व्यवसाईक सफलता चाहे न प्राप्त करे, परन्तु ऐ ईमानदार और सच्चाईपसन्द व्यक्ति बन कर सामने आयेगा, जिस की देश को आवश्यकता हैं। ऐसे व्यकित ही राष्टरिय चरित्र का निर्माण कर सकते है। ऐसे व्यक्तियों की उपलबधियां सिर्फ देया के लिये ही नहीं अपितु सारे विश्व के लिये हुआ करती हैं जैसे की आइंसटाइन और नियुटन की उपलब्धियां ने न केवल उनके देश को ही फायदा पहुचाया बल्कि सारे विश्व और प्राणीजगत को फायदा पहुंचाया।


# पत्रिका के लिये शुल्क

**सालाना शुल्क 120 रूपये है, शुल्क कैसे दें**

1. आप 9217970381 या 0172–2662870 पर subscribe करने की सूचना दे दें। PIN CODE अवश्य दें
2. आप चैक या कैश निम्न बैंक मे जमा करवा सकते हैं :–
   Vedic thoughts, Central bank of India A/C No. 3112975979 **IFS Code - CBIN0280414**
   Bhartendu soood, IDBI Bank - 0272104000055550 **IFS Code - IBKL0000272**
   Bhartendu Sood, Punjab & Sindh Bank - 02421000021195, **IFS Code - PSIB0000242**
3. **आप मनीआर्डर या at par का Cheque द्वारा निम्न पते पर भेज सकते है। H. No. 231, Sector 45-A, Chandigarh 160047.**
4. दो साल से अधिक का शुल्क या किसी भी तरह का दान व अनुदान न भेजें। शुल्क तभी दें अगर पत्रिका अच्छी लाभप्रद व रूचिकर लगे।
5. पैसे जमा करवा कर सूचित अवश्य कर दें।

यदि आप बैंक में जमा नहीं करवा सकते तो कृपया **at par** का चैक भेज दे।

# Editorial

## BE GREATFUL FOR ALL THAT LIFE OFFERS

Neela Sood

Gratitude is a source of great strength and it could lead to experience of eternal bliss. The question is, how to cultivate it? We could start by adopting a rational perspective of things around us.

Rational perspective is to be grateful for what you were fortunate to get without looking at or complaining about what you could not get or should have got. It means to become aware that in any given situation in our life, we are better placed than many around us, even though there may be others far more privileged than what we are. It is true, in any given situation, we are better off than many around us and for this we should be thankful to the Divine, without whose will, nothing can move.

For a minute when we look around, we will realise that we are blessed with numerous bounties which others will not have. We should acknowledge this and keep feeling gratitude.

Most of us do not have the insight to visualise situations in which life is much harder, tougher and painful than in which we happen to be. If we are only looking at what others have and we don't have, we will remain dissatisfied forever, simply because even after getting what we desire, our mind will hanker after something else, and several new desires will crop up. This is because instead of being happy and content, we are always wanting more and more of something or other.

It is this habit of remaining dissatisfied which creates unhappiness, and this bottled up sadness sometimes makes us take extreme steps. Instead of whining about what we don't have, we should direct our energy towards what we can do with whatever we have. This will help us in overcoming our shortcomings by sheer grit and determination. Any person or society lacking in gratitude could be bereft of moral values.

When we stop damning ourselves for not being wealthier and more successful than what we are, when in some corner of our heart we have a space for those who are relatively less privileged, when we remain grateful to the Divine for the countless good things we have and experience, before nurturing big expectations from somebody when we are humble enough to ask ourselves 'what have I done for him?' — the happiness which then flows is enduring and divine.

A Chinese proverb says it all so poignantly: 'I stopped asking God for a pair of shoes when I saw a man without feet....' The individual who decides to be happy and who has learnt to be contented and satisfied, such a man can never be overtaken by unhappiness and the resultant impulsive behaviour. So it is a good idea to learn to be grateful for all that life offers to us, and also express that thankfulness in different ways in which we relate to others and to situations.

# On Arya Samaj Sthapana Divas

## Master's truth cannot be the disciple's truth

**Bhartendu Sood**

Master's truth cannot be the disciple's truth; a master's light can be a source of light but cannot become our light. We can only absorb the directions, but the inner search has to be our own, so that we can kindle the light within us.

The incident on Shiv Ratri night, when the young Mool Shankar( Childhood name of Maharishi Dayanand saw rats dancing on Shiva's idol and eating the prasadam offered by the devotees gave two messages. One , the creator of the Universe cannot be in a manmade idol. He is formless, unborn and Omnipresent. Therefore, idol worship is not the right and wise way of worshipping God, which Arya Samajists quicky grasped as it was told by their Guru Maharishi Dayanand. Second message which was of much greater value and importance was that we should accept everything after reasoning and not because it was told by some superior. But, unfortunately , Arya Samajists ignored this all important message and it is for this reason that Arya samaj lost its cutting edge and became one of many sects.

Most of us are busy in acquiring more and more knowledge. We have become addict of hearing and reading same thing time and again. But, this borrowed knowledge has its limitations. It takes away our ability to think which only can bring enlightenment. Borrowed knowledge, by way of reading books and scriptures, does not help in connecting with our own being; there is no inner spark. Deep down there is a mist of gloom, a vacuum, emptiness, and it is this emptiness which makes us run after acquiring more and more knowledge.

It is true that Swami Virjanand taught Sanskrit vyakrana to Swami Dayanand, which enabled Dayanand to understand Vedas in their right perspective and in process raise war against the wrong interpretations of Vedic texts made by vested interests but, it is the light with in Dayanand that made him to launch a war on superstitions and social evils in Hindu society. It is that light which separated Dayanand from other religious Gurus of his time.

Without any doubt, knowledge is important but we must use this knowledge to explore our inner self and that is true enlightenment..

Master's truth cannot be the disciple's truth; a master's light cannot be our light. We can only take direction, but the inner search has to be our own, so that we can kindle the light within us, this is manifested by this story-- a conversation is said to have taken place between Gautama Buddha and his chief disciple Ananda, just before the former was ready to leave his body. The Buddha asked Ananda why he was crying bitterly, and the latter said, “What are we going to do now since we followed everything in your light and felt safe and secure?” Ananda said that once his master was gone, there would only be darkness. To which the Buddha replied: “You walked with me for so many years and yet you couldn't connect to your own inner light.”

His message to Ananda was simple, that despite following his footsteps for years, he couldn't find his own light, and even if the Buddha was going to live for few more years, Ananda would still walk in 'borrowed light'. The Buddha's last words to him were: "Appo Deepo Bhava" light the lamp within you" It had tremendous impact on Ananda, and it is said that the very next day, Ananda became enlightened. When he opened his eyes, it had the same spark, same gleam that people saw in the Buddha's eyes.

In the Bhagwad Gita, Krishna says that the source of light, the truth, the divinity, is within us: ***Jyotisam api taj jyotis, tamasam param uchyate, jnanam jneyam jnana-gamyam, hridi sarvasya visthitam*** — 'he is the source of light in all luminous objects. He is beyond the darkness of matter and is unmanifested. He is knowledge, He is the object of knowledge, and He is the goal of knowledge. He is situated in everyone's heart'. **The words of our sages are like a strong light that dazzles us for a moment, and then it is gone. One has only to absorb that light and their words, and implement them in our lives to attain our own inner light.**

We need not cling to anything, though we can learn from everyone; we need not blindly follow anybody, but let life lead us to the path created by existence, towards our own inner spiritual experience. Arya Samajists will do well to understand this rather than clinging to many things which have lost their bearing with time.

******


# M/S AMMONIA SUPPLY COMPANY

( An ISO 9001-2008 Certified Company)

Joins " VEDIC THOUGHTS" in its noble Pursuit of spreading 'Moral Values


ध्अभयं मित्रादभयममित्राद भयं ज्ञातादभयं नो परोक्षात
अभयं नक्तमभयं दिवा न सर्वा आशा मम मि़त्र भवन्तु।।

अथर्व वेद के इस मन्त्र में कहा है मित्र से हम अभय हो, शत्रु से अभय हों, परिचत से हम अभय हो, और जो परिचत नहीं हैं उस से भी हम अभय हो, दिन में अभय हो और सब दिशाऐं मेरी मित्र हों। देखने की बात यह है कि पहले प्रभु से प्रार्थना यह की गई है कि हम मित्र से अभय हो और उसके बाद यह कहा गया है कि हम शत्रु से अभय हो । ऐसा इसलिये कि जब मित्र शत्रु बन जाता है तो वह शत्र1 से भी अधिक भयानक हा जाता है।


SUPPLIERS OF ANHYDROUS AMMONIA AND LIQUOR AMMONIA

D-4 Industrial Focal Point, Derabassi, District (Mohali) Punjab

Contact:- Rakesh Bhargav, Branch Manager 093161-34239, 01762-652465

Fax 01762-282894. Email- asco.db@ascoindia.com & ascodb@gmail.com

## आर्य समाज स्थापना दिवस पर

# क्यों नहीं बनाना चाहते आर्य समाजी अपने बच्चों को आर्य समाजी ?

भारतेन्दु सूद

राधास्वामियों के बच्चे राधास्वामी, निरंकारियों के बच्चे निरंकारी , सांइ को मानने वाले साईं तो फिर क्यों नहीं आर्य समाजी के बच्चो आर्य समाजी ? नवे प्रतिशत आर्य समाजियों के बच्चे यही कहते सुनाई देंगे–––मेरे पिता जी, मेरे दादा जी कटर आर्य समाजी थे। और यह पूछो कि आप? तो एक हल्की हंसी के सिवा कुछ नहीं मिलेगा। यह एक जवलन्त प्रश्न है। यदि पचास प्रतिशत आर्य समाजियों के बच्चे भी आर्य समाजी हों तो शायद यह बात न उठे। पर यहां तो हाल यह पहुंच चुका है कि 95 प्रतिशत आर्यसमाजियों के बच्चे आर्य समाजी नहीं रहते। यह बात अलोचनातमक पहलू से न देखकर , यह सभी आर्य समाजियों के सोचने की है।

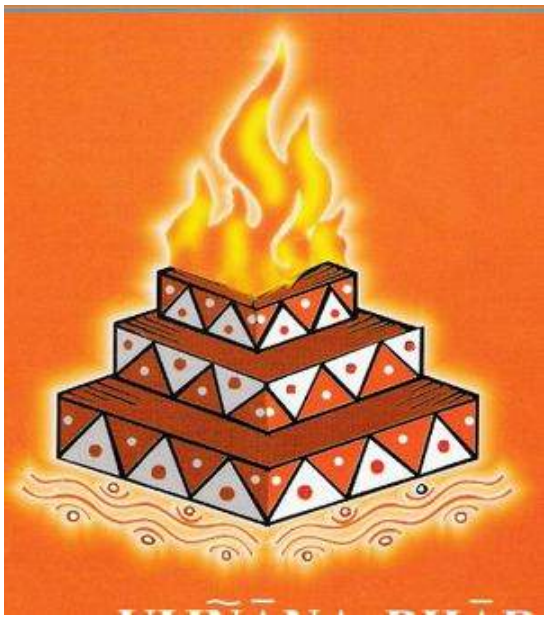

मैं अपने अनुभव के आधार पर दोष बच्चों को नहीं दूंगा। बच्चे को तो जो माता पिता बनायेंगें बन जायेगा, इस में भी मां की भूमिका मुख्य होती है।। बात असल में यह है कि हम आर्य समाजी ही अपने बच्चों को आर्य समाजी नहीं बनाना चाहते ? यह नहीं कि आर्य समाजी कोई इतने असहाय होते हैं कि बच्चों पर चलती ही नहीं, बिल्कुल चलती है, बच्चे पिता को मानते है पर पिता महोदय ही नही चाहते कि बच्चा आर्य समाज चले। आर्य समाजी बहुत पढी लिखी और समायदार कौम है। जो वे अपने बच्चों को बनाना चाहते है , उस के लिये पूरा समय देते है, पैसा खर्च करते है। यदि बच्चे को आई आई टी भेजना है तो उसे रोज कोंचिंग सैंटर तक भी छोड़ कर आते है, अच्छे से अच्छे कोचिंग सैंटर व कालेज का चुनाव करते हैं, परन्तु आर्य समाज भूल कर भी नहीं लाते कि कही गलती से भी आर्य समाज की छाया न पढ़ जाये।

अभी मैं सैक्टर 27 द्वारा आयोजित, बसंत और बाल हकीकत राय बलिदान स्मरण दिवस पर गया था। आयोजकों ने हर वर्ष की तरह कोई कसर नहीं छोड़ी थी। अच्छे वक्ता, अच्छे भजनीक और अच्छा ही प्रितीभोज परन्तु इन सब के होने के बावजूद श्रधालुओं की संख्या बहुत ही उदास करने वाली थी। यदि बाल आश्रम के 30 के करीब बच्चों को छोड़ दें जो कुल मिला का 30 श्रधालु भी नहीं थे। बच्चे तो थे ही नहीं। 20 के करीब मर्द और 20 के करीब औरतें थी । मैं बैठा यही सोच रहा था कि जो वहां पर उपस्थित है, क्या इनके आगे बच्चे या पोते पोतियां नहीं। मजे की बात तो यह है कि मेरे मित्र जो बाल आश्रम को चलाते हैं, वह भी आश्रम के बच्चों को ला सकते हैं पर अपने बच्चे को नहीं। बहुत अटपटा लगता है कि आर्य समाज का सत्संग दूसरे बच्चों के लिये तो उपयोगी मानते है परन्तु अपने बच्चों के लिये नहीं।

हम आर्य समाजीयों के चरित्र की सब से बड़ी खासयित यही है जो भी हमारी नसीहत है दूसरों के लिये हैं, अपने लिये नहीं–––उदाहरण के लिये यह बात माईक पर अक्सर सुनने को मिलती है।––अपने बच्चों को गुरूकुल में पढ़ाये, गुरूकुल शिक्षा ही सबसे उतम है, नया गुरूकुल खोलने के लिये तन मन से धन दें, इसाईयों के स्कूल में न पढ़ाये, बच्चे ईसायत सीखते हैं––और बोलने वाले के अपने बच्चे शहर के सब से अच्छे कानवेन्ट में पढ रहे होते हैं। आर्यसमाजी विद्वान प्रवक्ताओं का हाल तो और भी बुरा है। अक्सर वे गुरूकुलों से ही पढ़े होतें है और संस्कृत के ही विद्वान होते हैं––––––परन्तु अक्सर न तो उनके बच्चे गुरूकुल में पढ़ते हैं, न ही संस्कृत विषय लेते हैं और न ही आर्य समाजी होते

है। इस संदर्भ में मैं आपको एक घटना सुनाअंगा———————मैने उस समय वैदिक थोटस पत्रिका शुरू ही की थी। मैं आर्य समाज से जुड़े विद्वान प्रवक्ताओं को भेज दिया करता था। करनाल हरियाणा के एक प्रसिद्ध प्रवक्ता को भा गई उन्होने मुझे फोन किया और पत्रिका लगवाई और एक साल का शुल्क भी भेज दिया। एक दिन मैने उनकी मृत्यु का समाचार आर्य जगत में पढ़ा। मैने अपनी संवेदना का संदेश देने के नियेे फोन किया जो कि उनकी पत्नि ने उठाया। परिचय देने के बाद बात हई तो मैने कहा कि प्रोफैसर साहब ने एक साल का शुल्क दिया था उस में अभी 9 प्रतियां ही गई हैं, इस से पहले मैं कुछ कहता उन्होने कहा—————भाई साहब मैं तो ब्रहम कुमारी हूं, बेटे हमारे सांई से जुड़े हैं, हमारे यहां कोई पढ़ने वाला नहीं। इसी तरह हिमाचल प्रदेश आर्य प्रतिनिधी सभा के प्रधान हमारे परिवारिक मित्र थे। उन्होन भी पत्रिका लगा रखी थी, उनकी मृत्यु के बाद मैने फोन करके उनकी पत्नि से पूछा कि क्या वह पत्रिका चालु रखेंगी—————उनका कहना था—————भाई साहब मैं पड़ती नहीं, और कोई पढ़ने वाला है नहीं। अब मैं किसी आर्यसज्जन की मृत्यु होने पर पूछता ही नहीं। मुझे पता लग गया है कि जहां तक आर्य समाज का सम्बन्ध है, कहानी यहीं खत्म हैं।

ऐसा लगता है हम आर्य समाजी यह महसूस करते हैं कि हमें आर्य समाजी बन कर कोई फायदा नहीं हुआ, यदि फायदा हुआ होता तो अवश्य अपने बच्चों को आर्य समाज की और झुकाते। उदाहरण के लिये मुझे सदैव ऐसा लगा कि मुझे जीवन में सब से अधिक फायदा आर्य समाज के सर्म्पक में रहने से हुआ, यदि कोई अच्छाई है तो आर्य समाज के कारण है। इसलिये मैने शुरू से ही नियम बना लिया कि जब भी आर्य समाज जाउंगा पत्नि और बच्चों के साथ ही जाउंगा। मेरे बच्चों और पत्नि ने भी खुश होकर इस नियम को माना और जीवन में इस से वे बहुत अधिक लाभन्दित अनुभव करते हैं। मेरी पत्नि हमारी शादी से पहले आर्य समाजी नहीं थी परन्तु आज उसका झुकाव आर्य समाज की तरफ मेरे से भी अधिक है यही नहीं उसका यह कहना कि आर्य समाज जैसी सही और ठीक मार्ग दर्शन करने वाली संस्था और कोई नहीं। परन्तु उसके लिये यह भी आवश्यक है कि हम आर्य समाज को सिधान्तिक रूप से समझें न की हवन में कुछ आहुती देने तक या कुछ मन्त्र बोलने तक सीमित रहें। यदि हम कुछ समय खर्च कर बच्चों को आर्य समाज के सिद्वान्तो के बारे में बता देते हैं तो मैं विश्वास के साथ कह सकता हूं कि वे किसी और मत मतान्तर की और नहीं जायेंगे।

क्या हैं वे आर्य समाज के सिद्धान्त जो आपके जीवन को सुखी बना सकते हैं,

जो सुख एक ही ईश्वर को मानने में है वह किसी देवी देवता की पूजा में नहीं।

जो सुख ईश्वर को अनादि , अजन्मा निराकार, सर्वशक्तिमान मानने में वह किसी रूप में मानने में नहीं।

जो सुख ईश्वर को अपने अन्दर ही जानकर है, वह किसी दुर्गम स्थान उस का बास मानकर वहां जाने में नहीं।

जो सुख ईश्वर से अकेले में सत्संग में है वी किसी भी कर्मकाड में नहीं।

जो सुख और मन की शाति किसी भी तरह के अन्धविश्वास से दूर रह कर है वह किसी भी ऐसे मिथ्या विश्वास को मानने में नहीं।

जो सुख और मन की शाति एक निराकार और सर्वशक्तिमान प्रभु के आश्रय में रहन से है वह बहुत पहंचे हुये बाबा के सनिध्य में रहने से नहीं।

जो बुद्धिमता तर्क के साथ किसी भी बात का अपनाने में हैं वह कही हुई बात को मानकर चलने में नहीं। यह सब से बड़ी शिक्षा है जो आर्य समाज देता है।

जीवन भर किसी न किसी वक्ता को बुलाकर एक ही बात को बार बार सुनते रहने से काम नहीं चलेगा, जो कि हमारे आर्य समाजों की हालत है। इन्हें बूढ़े व्यक्तियों का क्लब कहना अधिक उचित होगा। आवश्यकता यह है कि जो जीवन भर सुनते आये, वे दूसरों को भी सुनायें, कम से कम अपने बच्चें को तो सुनायें , ताकी वे तो आर्य समाजी रहें। हवन में दो आहुतियां दे दी या एक दिन यजमान बन गये उस से कोई आर्य समाजी नहीं बन सकता। हवन तो सभी हिन्दु मतों वालें कर रहें है, आवश्यकता यह है कि हम आर्य समाज के सिद्धांतों को समझें और जीवन में अपनायें।

# I wish I were poor

Bhartendu Sood

My family had migrated from Present day Pakistan. Overnight, we were pauper and had to struggle even for even meal a day. Every family member took to some manual work so much so; even women worked in farms and would be given grains as wages.

By and large, migrants, about three million, called 'refugees' reposed their faith in hard work and didn't lose sight of the fact that good education was the key for overall development. With the result, after four decades of struggle, next generations had good jobs, a roof on the head and had achieved development in all spheres of life. Best thing being that this was achieved without any dole from government. Rather, most of them were paying taxes to the Government.

As roots of democracy were getting stronger, means to get votes also changed. Now the question was how to generate vote bank. The 80's saw subsidies and reservations as one of the tools in the name of social justice. Intentions were noble but implementation was flawed and with ulterior motives. It was votes over economy & exchequer.

Indian middle class, no doubt was getting larger and larger, wealthier and wealthier, but looking at the state of politics in the country, it thought it wise to distance itself from the hustle and bustle of politics. To vote is one thing and to feel passionately involved in the system is something different which the Indian middle class avoided. No, doubt, it had become intellectual spine of the country but was happy to be guided by the unscrupulous politicians.

With the result, our leaders came to know that their destiny was decided by the poorer Indians who vote not the well -off middle and rich class. A clever and opportunistic lot, as they are, naturally, their focus shifted to the poor. According to one study, by the year 2016 there were 950 schemes to benefit these so called underprivileged and 11 of them account for 50% of our budget allocation. Look at the lure & importance of these schemes for remaining in power, the party which opposed MINERGA tooth and nail in the Parliament, increased the allocation under the head, when came to power.

As one must have noticed, in these elections, there is hardly any talk of policies but parties are in race to promise more and more freebies. Focus is 30% of population; nobody talks of remaining 70%. Interesting part is that 15% of these 30% so called deprived and for whom all these schemes have been made, are much better off than the middle class. Mr. Rahul Gandhi, one of the prospective candidates for PM's post, made surgical strike in this period of strikes, by promising Rs 72000 income per year for the poorest 20% of the families, which implies that almost 260 million of our population will have Rs 6000 per month, sitting at home, without having to do anything.

We have fast moved in to a work culture when a man in rural India and small towns, sees wisdom in spending his time on getting various subsidy cards rather than slogging to earn his livelihood. Yes, in this new culture, middle class has also an important role to play--work and slog for 12 hours to generate taxes to fund these schemes.

While 72 years back my ancestors saw enough virtue in doing hard work to come out of poverty and destitution, today I see enough sense in remaining poor. I simply hope, you won't blame me for this degeneration.

# कीचड़ और कमल

सीताराम गुप्ता

कहा जाता है कि कमल कीचड़ में ही खिलता है। कीचड़ या पंक में उगने या उत्पन्न होने अथवा खिलने के कारण ही उसे पंकज कहा गया है। लेकिन क्या कमल वास्तव में कीचड़ में ही उगता, उत्पन्न होता अथवा खिलता है? हाँ, लोग तो यही कहते हैं कि कमल कीचड़ में ही खिलता है। अब ये कीचड़ क्या है? कीचड़ मिट्टी और पानी का संयोग है। अब बतलाइए दुनिया का कौन सा पादप या पुश्प है जो मिट्टी और पानी के संयोग के बिना उगता या पल्लवित–पुश्पित होता है? इस धरती पर जितनी भी वनस्पतियाँ हैं सभी मिट्टी में उगती हैं। बीजों को अंकुरित होने व बढ़ने के लिए पानी की भी ज़रूरत पड़ती है। सूर्य की रोशनी व हवा में घुली कुछ गैसों की भी ज़रूरत होती है। किसी पौधे को कम पानी चाहिए तो किसी को अधिक पानी चाहिए। मिट्टी भी अनेक प्रकार की होती हैं। मिट्टी की विविधता के कारण ही वनस्पति जगत में विविधता पाई जाती है। मृदा व जल के संयोग की विविधता के कारण भी वनस्पति जगत में विविधता उत्पन्न होती है।

कमल कीचड़ में ही क्यों जल में भी तो उगता व खिलता है। इसीलिए तो उसे जलज कहते हैं। जलज ही नहीं नीरज, वारिज और अंबुज भी कहते हैं जिससे सिद्ध होता है कि कमल जल में ही उगता है। रुके हुए पानी में। तालाब या सरोवर में। नदी या समुद्र में नहीं। कमल जल में उगता है इसके अनेक पर्यायवाची शब्द उपलब्ध हैं जबकि कमल कीचड़ में उगता है इसका एक ही पर्यायवाची है। तालाब या सरोवर में जहाँ पानी होता है उसके तल में मिट्टी होती है। उसी मिट्टी में कमल के पौधे की जड़ें होती हैं। उसी के द्वारा वह मिट्टी से पोशण पाता है। यदि तालाब या सरोवर का तल पक्का हो तो उसमें कमल क्या कुछ भी नहीं उग सकता। उगने के लिए मिट्टी पहली शर्त है। जल में उत्पन्न होने और खिलने वाला कमल हो या दूसरे जलीय पुश्प वे सभी पानी के ऊपर खिलते हैं। यदि तालाब या सरोवर में जल की गहराई बहुत अधिक है तो कमल वहाँ नहीं उगते। कमल केवल उथले जल में ही खिलते हैं गहरे जल में नहीं। गहरी झीलों के उथले किनारों पर खिल सकते हैं बीच गहराई में नहीं।

कमल के विशय में अनेक भ्रांतियों से साहित्य भरा पड़ा है। कुछ कहते हैं और कुछ ने लिखा है कि मानसरोवर में कमल खिलते हैं। बहुत ऊँचाई पर कहाँ कमल खिलते हैं? जो झील अत्यधिक सर्दी के कारण साल के अधिकांश महीनों में जमी ही रहती है उसमें कमल कैसे खिल सकते हैं? वास्तव में कमल इस महिमामंडन का कारण है इसे अति महत्त्व दिया जाना। और महत्त्व दिए जाने का कारण है कमल का सौंदर्य। कमल की मसृणता व गंध। लेकिन अनेकानेक ऐसे पुश्प हैं जो कमल से भी सुंदर और आकर्शक हैं। कमल को अधिक महत्त्व देने का कारण हमारी हज़ारों वर्शों की कंडीशनिंग मात्र है। कमल व दूसरे आकर्शक पुश्प ही नहीं हर पुश्प

महत्त्वपूर्ण होता है चाहे वह कितना भी अनाकर्शक अथवा गंधहीन क्यों न हो। उसी से उसकी प्रजाति के पौधों का विकास संभव है। प्रकृति में जैव–विविधता अनिवार्य है। सभी पेड़–पौधे, वनस्पतियाँ, जीव–जंतु व भौगोलिक स्थितियाँ इसको बनाए रखने में सहयोग देती हैं। कमल महत्त्वपूर्ण नहीं है ये बात नहीं है कमल भी कम महत्त्वपूर्ण है लेकिन अन्य भी कम महत्त्वपूर्ण नहीं हैं।

कमल का महिमामंडन प्रेरणा प्रदान करने के लिए किया जाता है। कमल कीचड़ में खिलता है अथवा विशम परिस्थितियों में भी खिलने से मना नहीं करता ये प्रेरणास्पद बात है। ये उन लोगों के लिए प्रेरणास्पद बात है जिन्हें विशम परिस्थितियों और समस्याओं से जूझना पड़ता है। जिनको अच्छा परिवेश उपलब्ध नहीं होता। जो असामान्य स्थितियों में रहने को विवश हैं। जो नारकीय परिस्थितियों में रहने को अभिशप्त हैं। जो ये कहते हैं कि हम ऐसे में कैसे आगे बढ़ें उनके लिए कमल का उदाहरण है कि कमल भी कीचड़ में उत्पन्न होता है और खिलता है। जब कमल कीचड़ में उत्पन्न हो सकता है तो वे भी विशम परिस्थितियों के कीचड़ में कमल की तरह खिलकर अपना विकास कर सकते हैं। कमल की तरह सुगंध बिखेर सकते हैं। कमल की तरह आकर्शक बन सकते हैं। विनम्र हो सकते हैं। समाज व राश्ट्र के लिए उपयोगी बन सकते हैं। कमल की तरह सम्मान व श्रद्धा पा सकते हैं। कमल की तरह विशम परिस्थितियों के बावजूद हर प्रकार की उन्नति कर सकते हैं।

पुनः कीचड़ की बात करते हैं। कीचड़ विशम परिस्थितियों अथवा समस्याओं का ही प्रतीक नहीं यह गंदगी का प्रतीक भी है। यह गंदगी बाह्य भी हो सकती है और आंतरिक भी। भौतिक भी और मानसिक भी। यदि आंतरिक गंदगी है तो उसमें उत्तम विचार रूपी कमल पुश्पों का विकसित होना संभव ही नहीं। भौतिक गंदगी में भी कमल नहीं खिलते। जिसे वास्तव में कीचड़ कहते हैं उस गंदगी में सूअर ही अधिक आनंदित होता है। ऐसी गंदगी में जहाँ सूअर उत्सव मनाते हैं कमल नहीं खिलते। आज महानगरों से लेकर गाँवों तक में कीचड़ और गंदगी की कमी नहीं। उस गंदगी और कीचड़ में कोई कमल नहीं खिलता। खिल ही नहीं सकता। यदि ऐसा संभव होता तो इस गंदगी में कमल उगाकर उसे उद्यानों में परिवर्तित कर लेते। दुनिया में चारों तरफ फैली मलिनता और दुर्गंध के साम्राज्य से मुक्ति पा लेते।

जिन जलाशयों अथवा झीलों में गंदगी व कीचड़युक्त पानी पहुँचता है उनमें भी कमल उगना बंद कर देते हैं। कमल ही नहीं दूसरी वनस्पतियों और जीव–जंतुओं के लिए भी अपना अस्तित्व बचाए रखना कठिन होता जा रहा है। वहाँ जलकुंभी अपना साम्राज्य स्थापित कर लेती है। ऐसे जल में जो भी उत्पन्न होता है वह अत्यंत निकृश्ट कोटि का होता है। उसमें दुर्गंध व्याप्त हो जाती है। ऐसी गंदगी में न कमल खिलता है न जिंदा रह पाता है। खिल भी नहीं सकता। कमल को भी विकसित होने व खिलने के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ चाहिएँ। व्यक्ति को भी विकास के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ चाहिएँ। ऐसे में उन युवकों को जो अत्यंत विशम परिस्थितियों में जी रहे हैं उनसे कैसे कहा जा सकता है कि कमल कीचड़ में ही उत्पन्न होता है? ये कहने वाले स्वयं ये करके दिखलाएँ तो कोई बात है। कीचड़ का न तो कोई महत्त्व रहा है और न रहेगा। कमल भी कीचड़ में नहीं जल की ऊपरी सतह पर ही खिलता है।

ए डी–106–सी, पीतम पुरा,
दिल्ली–110034
फोन नं 09555622323

# सच्चा मित्र कौन

नरेन्द्र आहूजा 'विवेक'

राजेश बीमार पड़ा तो उसे अपने एक पुराने डाक्टर मित्र की याद आई । हालांकि पिछले कुछ सालों से उस पुराने सहपाठी से मिलना काफी कम हो गया था परन्तु अब आवश्यकता पड़ने पर अनायास उसकी याद आ गई । परन्तु पता चला कि वह डाक्टर मित्र तो कुछ दिनों के लिए किसी सेमिनार में भाग लेने विदेश गया हुआ है । पहले समय की दूरी अब स्थान की दूरी, पुराना डाक्टर सहपाठी मित्रा जरूरत के समय उपलब्ध नहीं था ।

दिनेश को बिजनेस में घाटा हो गया । धन की तंगी रहने लगी । नगर सेठ का बेटा साथ ही तो पढ़ता खेलता था । अब तो पिता का कारोबार वही संभालता है । उसी से मांग लेता हूं, सोच कर उसके पास जा पहुंचा और थोड़ी भूमिका बांधकर हाथ पसार दिए । दिनेश की समस्या सुनते ही उसने भी बाजार की मंदी का रोना शुरू कर दिया ''हम भी बैंकों से लोन लेकर काम चला रहे हैं'' । दिनेश का दोस्त वक्त पर काम नहीं आ पाया ।

इस प्रकार जीवन में ना जाने कितने अवसर ऐसे आते हैं जब आदमी खुद को अकेला महसूस करता है । ऐसी मुसीबत के समय उसके मुंह से स्वतः ईश्वर का नाम निकल पड़ता है । जब आस पास सहायता के लिए कोई मित्र दिखाई नहीं देता तब केवल परमपिता परमेश्वर की ही याद आती है । वही एक परम मित्र जान पड़ता है । वैसे यह मनुष्य की कमजोरी ही है कि वह अपने इस परम मित्र परमेश्वर को केवल दुःख के समय ही याद करता है

दुःख में सिमरन सब करें , सुख में करे ना कोय ।
जो सुख में सिमरन करे , तो दुःख काहे को होय ।।

यदि मनुष्य सुख में भी अपने इस परम मित्र को याद करता रहे तो शायद दुख की स्थिति में ना फंसे । अथर्ववेद का मंत्र है ''इन्द्रस्थ यज्यु सखा'' अर्थात् वह इन्द्र परमात्मा हम सभी जीवात्माओं का परम मित्र है । वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक एक तथा ईश्वरीय वाणी है ।

परमात्मा प्रत्येक जीवात्मा का परम मित्र है यह इसी से सिद्ध हो जाता है कि प्रत्येक मुसीबत की स्थिति में अनायास उसी ईश्वर की याद आती है । परन्तु कुछ लोग कहते हैं कि यदि वह सर्वशक्तिमान ईश्वर हमारा मित्र है तो हम पर यह मुसीबतें आती ही क्यों हैं ? वह हमारा परम मित्र परमेश्वर अपने मित्र धर्म का निर्वाह करते हुए मुसीबत को आने से पूर्व ही रोक क्यों नहीं लेता ? यहां हमें यह जान लेना होगा कि मनुष्य पर आने वाली मुसीबतें उसके कर्म फलों के रूप में ईश्वरीय न्याय व्यवस्था के आधीन मिला करती हैं । मनुष्य पाणिनी अष्टाध्यायी के सूत्रा के अनुसार ''स्वतंत्रा कर्ता'' होने के कारण भोक्ता भी स्वयं है और उसे प्रत्येक शुभ अशुभ कर्म का फल अवश्य भोगना पड़ता है ।

किसी भी कार्य को करने से पूर्व प्रत्येक मनुष्य के मन में उहापोह की स्थिति पैदा होती है एक वैचारिक देवासुर संग्राम मन में होता है । इस देवासुर संग्राम में हमारा परम मित्रा परमेश्वर अपने अन्तर्यामी एवं सर्वव्यापी गुण के कारण हमारे अंदर बाहर रहता हुआ हमें निश्चित रूप से शुभ कार्यो के लिए प्रेरित करता है परन्तु हम ईर्ष्या, राग द्वेष, स्वार्थों के वशीभूत होकर परम मित्र परमेश्वर की प्रेरणा को सुनने से इंकार कर देते हैं और मन में चल रहे देवासुर संग्राम में यदि आसुरी भावों की विजय होती है तो हम दुष्कर्मों की तरफ चलते हैं और अपने किए इन दुष्कर्मो का फल जब परमपिता परमेश्वर दंड स्वरूप हमें देते हैं तो भी उनका परम मित्रावत अभिप्राय यही होता है कि हम इस दंड या कष्ट से सबक लें और इन गलतियों को जीवन में फिर कभी ना दोहरायें । परन्तु हम अपने परम मित्र की इस नेक सलाह को नहीं मानते और तुच्छ स्वार्थों की पूर्ति, भौतिक क्षणिक सुख की प्राप्ति के लिए राग द्वेष ईर्ष्या के जाल में फंसे अधोगति की तरपफ निरन्तर चलते रहते हैं । इसमें कभी हमारी है ना कि हमारे परम मित्र की ।

# How to be happy while managing top posts as leaders or executives

**H.H. Dalai Lama**

I have engaged with many leaders of governments, companies, and other organisations over the past nearly 60 years, and I have observed how our societies have developed and changed. I am happy to share some of my observations in case others may benefit from what I have learnt. Leaders, whatever field they work in, have a strong impact on people's lives and on how the world develops. We should remember that we are visitors on this planet. We are here for 90 or 100 years at the most. During this time, we should work to leave the world a better place.

What might a better world look like? I believe the answer is straightforward:
A better world is one where people are happier. Why? Because all human beings want to be happy, and no one wants to suffer. Our desire for happiness is something we all have in common….

But today, the world seems to be facing an emotional crisis. Rates of stress, anxiety, and depression are higher than ever. The gap between rich and poor and between CEOs and employees is at a historic high.
And the focus on turning a profit often overrules a commitment to people, the environment, or society.
I consider our tendency to see each other in terms of 'us' and 'them' as stemming from ignorance of our interdependence. As participants in the same global economy, we depend on each other, while changes in the climate and the global environment affect us all. What's more, as human beings, we are physically, mentally, and emotionally the same.
Look at bees. They have no constitution, police, or moral training, but they work together in order to survive. Though they may occasionally squabble, the colony survives on the basis of cooperation. Human beings, on the other hand, have constitutions, complex legal systems, and police forces; we have remarkable intelligence and a great capacity for love and affection. Yet, despite our many extraordinary qualities, we seem less able to cooperate.
In organizations, people work closely together every day. But despite working together, many feel lonely and stressed. Even though we are social animals, there is a lack of responsibility toward each other. We need to ask ourselves what's going wrong.
I believe that our strong focus on material development and accumulating wealth has led us to neglect our basic human need for kindness and care. Reinstating a commitment to the oneness of humanity and altruism toward our brothers and sisters is fundamental for societies and organizations and their individuals to thrive in the long run. Every one of us has a responsibility to make this happen.
Cultivate peace of mind. As human beings, we have a remarkable intelligence that allows us to analyze and plan for the future. We have language that enables us to communicate what we have understood, to others. Since destructive emotions like

anger and attachment cloud our ability to use our intelligence clearly, we need to tackle them.

## For Survival

Fear and anxiety easily give way to anger and violence. The opposite of fear is trust, which, related to warm-heartedness, boosts our self-confidence. Compassion also reduces fear, reflecting as it does a concern for others 'well-being. This, not money and power, is what really attracts friends. When we're under the sway of anger or attachment, we're limited in our ability to take a full and realistic view of the situation. When the mind is compassionate, it is calm and we're able to use our sense of reason practically, realistically, and with determination.

We are naturally driven by self-interest; it's necessary to survive. But we need wise self-interest that is generous and cooperative, taking others' interests into account. Cooperation comes from friendship, friendship comes from trust, and trust comes from kind-heartedness. Once you have a genuine sense of concern for others, there's no room for cheating, bullying, or exploitation; instead, you can be honest, truthful, and transparent in your conduct.

The ultimate source of a happy life is warm-heartedness. Even animals display some sense of compassion. When it comes to human beings, compassion can be combined with intelligence. Through the application of reason, compassion can be extended to all seven billion human beings. Destructive emotions are related to ignorance, while compassion is a constructive emotion related to intelligence. Consequently, it can be taught and learned.

The source of a happy life is within us. Troublemakers in many parts of the world are often quite well-educated, so it is not just education that we need. What we need is to pay attention to inner values.

## Take these Steps

The distinction between violence and nonviolence lies less in the nature of a particular action and more in the motivation behind the action. Actions motivated by anger and greed tend to be violent, whereas those motivated by compassion and concern for others are generally peaceful. We won't bring about peace in the world merely by praying for it; we have to take steps to tackle the violence and corruption that disrupt peace. We can't expect change if we don't take action. Peace also means being undisturbed, free from danger. It relates to our mental attitude and whether we have a calm mind. What is crucial to realize is that, ultimately, peace of mind is within us; it requires that we develop a warm heart and use our intelligence. People often don't realize that warm-heartedness, compassion, and love are actually factors for our survival.

Buddhist tradition describes three styles of compassionate leadership: the trailblazer, who leads from the front, takes risks, and sets an example; the ferryman, who accompanies those in his care and shapes the ups and downs of the crossing; and the shepherd, who sees every one of his flock into safety before himself. Three styles, three approaches, but what they have in common is an all-encompassing concern for the welfare of those they lead.

# श्री रवि कुमार आर्य द्वारा बहुत उपयोगी पुस्तक – चिन्ता से चिन्तन की और

यह आर्य समाज सैक्टर 16 का सौभाग्य है कि वहां का प्रबन्धन का कार्य श्री रवि कुमार आर्य जी जैसे विद्वाान व उच्च पद पर रहे एक कुशल प्रबन्धक के हाथ में है। श्री रवि कुमार आर्य न केवल भौतिक विज्ञान में पंजाव विश्वविद्याालय से MSc हैं , पर साथ में वे कानून के स्नातक व MBA भी हैं। उनकी योग्यता की झलक इस बात से मिल जाती है कि वे पंजाब व सिन्ध बैंक से महा प्रबंधक के पद से सेवानिर्वत हुये। इस में किंचित मात्र संदेह नहीं कि उनके कुशल प्रबन्धन सें आर्य समाज सैक्टर 16 को नई दिशा मिली है।

जब ऐसी भूमिका वाला व्यक्ति कलम पकड़ता है तो जो कुछ भी वह लिखता है वह विशेष ही होता है जैसा कि उनकी लिखी पुस्तक चिन्ता से चिन्तन की और को पढ़कर ज्ञात हुआ। आज जब कि वेदों का ज्ञान, स्वार्थी तत्वों के कारण, लोगों को न समझ आने वाली भाषा में, पुस्तकों तक ही रह गया है। श्री रवि जी ने अंग्रेजी में इस पुस्तक द्वारा बता कर हमारी वर्तमान और आने वाली पीढ़ी पर बहुत उपकार किया है।

आज हमारे अधिकतर बच्चे अंग्रेजी मिडियम में ही पढ़ते हैं, जो कि समय को देखते हुये बिल्कुल सही है। न तो वे संस्कृत समझते हैं , चाहे स्कूल में पढ़ी हो पर व्यवहार में न होने के कारण उसका कोई उपयोग नही, और न हीं गुरूकुल से पढ़े स्नातको द्वारा किया कठिन हिन्दी का अर्थ वह अपने अनुरूप पाते है। परिणाम जो हमारा पढ़ा लिखा तबका है वह उन अध्यात्मिक गुरूओं को अपना रहें हैं जो कि अंग्रेजी भाषा में अध्यात्मिक सहित्य दे रहें हैं। बातें चाहे वे वेदों की ही करते हैं, पर अक्सर आर्य समाज के सिद्धान्तों व वेदों की भावना से अक्सर दूर ही होती हैं। ऐसे में श्री रवि जी ने संध्या विषय का चुनाव कर उसे अंग्रेजी भाषा में वेदों के सही अनुरूप में सामने ला कर, बहुत ही बुद्धिमता का कार्य किया है जिस के लिये वह बधाई के पात्र है।

जो मेरी आयु के आर्य समाजी है वह शायद याद करेंगे कि संध्या हमारे परिवारों की दिनचर्या का अभिन्न अंग थी। न केवल परिवार में दोनों समय सभी इकठे होकर संध्या करते थे बल्कि आर्य समाजों में हवन के बाद संध्या की जाती थी। मेरे अनुसार संध्या तो ब्रहम यज्ञ है, इसे आप कहीं भी कर सकते हैं, चाहे बस, रेलगाड़ी में है, या फिर दूसरे देश में हैं। यही नहीं आप दूसरे मतों के पूजा स्थलों में भी ऐक कोने में बैठ कर कर सकते हैं। फिर मेरे अनुसार संध्या एक पूर्ण प्रार्थना है जिस में ईश्वर की स्तुती, अपने शारिरिक , मानसिक और अध्यात्मिक उत्थान के लिये, दूसरों की भलाई के लिये प्रार्थना है। समय 10 या 15 मिंट ही लगते है, परन्तु बात आदत बनाने की हैं। जो बना लेता है वह इसे छोड़ नहीं सकता। यदि कभी किसी कारण छूट जाये तो ऐसा ही महसूस होता है जैसे स्नान न करने पर होता है, और व्यक्ति तुरन्त संध्या करने चला जाता हैं । ठीक भी हैं क्यों जिस प्रभु ने सब कुछ दिया, उस का धन्यावाद न करना पाप ही है। परन्तु आज के समय में जब आप परिवार व अतिथियों के साथ संध्यां करें तो हिन्दी, अंग्रेजी या अपनी भाषा में अर्थे के साथ करें। यही रवि जी की पुस्तक का संदेश है। मेरे अनुसार मनसा प्राकृमां मन्त्रों में मन को शाति देने वाला सब से सुन्दर संदेश यह है––––हे ईश्वर आप चारों दिशाओं में विराजमान हैं, आपने हमें जीवन के सब साधन सूर्य का प्रकाश, वायु, जल अग्नि आदि दे कर हमें प्राण देते हैं, पालतें हैं व सब खतरनाक प्राणियों से रक्षा करते हैं। हम आपके बहुत धनयावादी हैं। जो अन्जाने में हमस` द्वेश करता है या जिस से अनजाने में हम करते हैं, उसे आपके

न्याय पर छोड़ देते हैं। ईश्वर पर ऐसा विश्वास, मन की शांति का सब से बड़ा साधन है।
श्री रवि जी को एक सुझााव भी है––––कुपया हिन्दी प्रेमियों के कहने पर इस का अनुवाद करने न लग जायें। हिन्दी में ऐसी हजारों पुस्तकें हैं जिन्हें कोई छूता तक नहीं , और आदमी के मरने के बाद उस के बच्चों द्वारा किसी कबाडी को दे दी जाती है। जो आज के समय में पढने वाला है या जिस को मन में रख कर पुस्तक बनाई गई है, वह हिन्दी और अंग्रेजी दोना पढ़ लेगा। इस लिये अपनी धन ओर शक्ति हिन्दी में पुस्तक बनाने पर न खर्च करें तो अच्छा होगा इसी पुस्तक की कोई कीमत रख दें। एक कहावत है–––अपनी टांग कुते के आगे कर दो तो वह भी नहीं काटता। रवि जी 50 साल से आर्य समाजी हैं, अब तक उन्हें यह ज्ञात हो जाना चाहिये था कि हम आर्य समाजियों से अलोचना तो सुन सकतें हैं पर सराहना मुश्किल से मिलती है, और जो यहां सराहना पा जाता है उसने समझो सब परिक्षायें पास कर ली।

दो शब्द श्रीमती अमिता आर्य जी के बारे में
मैं तो यही कहूंगा कि रवि जी बहुत सौभागयशील हैं जिन्हें श्रीमती अमिता आर्य पत्नि के रूप में मिली। हर कदम पर रवि जी के साथ हैं।
किसी पद को सम्भालकर कार्य करने वाले तो अक्सर देखे जातें हैं पर बिना पद या पराश्रमिक के सेवा करने वाले, खास कर हमारे आर्य समाजों में, कम ही देखे जाते हैं। श्रीमती अमिता आर्य इस श्रेणी में हैं। समाज के सफल प्रवन्धन में उनका सहयोग कोई भी देख सकता है। वह अपने कीमती समय का बहुत बडा अंश समाज को देती है, खास कर कम खर्च में मासिक दिये जाने वाले लंगर व प्रीतिभोज में उनकी एहम भूमिका रहती है।
एक और बात जो मुझे छू गई, वह है अनुशासन को महत्व। इसके लिये हर व्यक्ति को अलोचना भी सुननी पड़ती है परन्तु वह इसे सहर्ष स्वीकार कर इस में निष्ठा बनाये रखती है।
ईश्वर रवि जी व अमिता जी को अच्छा स्वास्थय व लम्बी आयु दे ताकी उनकी सेवा का फायदा आर्य समाजों को मिलता रहे।

1. *पत्रिका में दिये गये विचार लेखकों के अपने हैं। सम्पादक जरूरी नहीं उस से सहमत हो। लेखकों के टैलीफोन नम्बर दिये है, आप सम्पर्क कर सकते है। आपके लेख के बारे में विचार अवश्य प्रकाशित किये जायेंगे।*

*न्यायिक प्रक्रिया के लिये चण्डीगढ़ न्यायलय ही मान्य है।*

2. *विज्ञापन से सम्पादक के विचारों का मिलना, आवश्यक नहीं सम्पादक उस की किसी भी प्रकार जिम्मेवारी नही लेता।*

# वेदों की बात तो हम करते हैं पर ऐसा लगता है आचरण में विदेशी लोग लाते हैं

आचार्य डा उमेश यादव

यहां पर आचार्य डा उमेश यादव के बारे में बताना आवश्यक होगा। आचार्य डा उमेश यादव का जन्म व शिक्षा बिहार भारतवर्ष में ही हुई। गुरूकुल में प्रारम्भिक शिक्षा के उपरान्त, उन्हें पी एच डी की उपाधी भी पंजाव विश्वविद्यालय द्वारा पुरस्कृत की गई । 2005 में इंगलैंड स्थान्तर करने से पहले वे भारत के बिभिन्न आर्य समाजों में आचार्य रहे जिस में आर्य समाज सैक्टर–7 का नाम प्रमुख है। उन्होने कई पुस्तकें भी लिखी, जिस में याजुष मन्त्रो में अध्यात्मक– भावना प्रमुख है। मझे भी इस पुसतक को पढ़ने का अवसर मिला। स्वभाविक है, ऐसा व्यक्ति वेदों को भली भान्ती पढ़ा होगा और समझा होगा।

मुझे उनका उपदेश सुनने का मौका आर्य समाज सैक्टर–7 के मासिक सत्संग में मिला। उपदेश अच्छा था परन्तु जो उनकी कही एक बात मुझे छू गई वह थी ––––– मुझे इंगलैंड में लगभग 13 वर्ष रहने के बाद ऐसा लगा कि वेदों की बहुत जोर शोर से बातें तो हम भारतीय करतें है परन्तु जहां तक जीवन में धारण करने का सवाल है, विदेशी लोग करते हैं। मैं अपने अनुभव के आधार पा कह सकता हूं कि उनकी कही यह बात सोला आने ठीक है। वेदों के नाम पर भारत में संसकृत पढ ली, पी एच डी की उपाधी प्राप्त कर ली, अध्यापक लग गये और जीविका अजिर्त करने के नाम नर कर्मकाण्ड कराना प्रारम्भ कर दिया, इस के सिवा कुछ नहीं। कर्मकाण्ड भी ऐसा जिसे न तो करवाने वाला समझता है और जिसे के लिये किया जाता है, उसकी तो बात ही छोड़ें। विवाह संस्कार की बात ही लें ले, मैं विश्वास के साथ कह सेता हूं कि 99 प्रतिशत वर बधु को यह मालुम नहीं पढ़ता कि पण्डित जी क्या बोल रहें हैं, न ही वह समझने की कोशिश करते हैं, शायद वे यह मानते हों कि पंडित महोदय हमारे लिये प्रार्थना कर रहें हैं, हमें करने की कोई आवश्यकता नहीं। हम में अधिक हिन्दुओं का यह विश्वास है कि ईश्वर केवल संसकृत ही समझता है। हमें प्रारथना करने की आवश्यकता नहीं पण्डित ने कर दी तो फल हमें मिल जायेगा। यह हाल केवल पौराणिकों का ही नहीं हम आर्य समाजियो का भी है, जिस संस्था का जन्म ही तर्क की प्रधानता से हुआ था, वह भी उतनी ही अन्धविश्वासों और कर्मकाण्डों की शिकार है, जितनी की दूसरी संस्थायें। हमारे धार्मिक उनसवों को ही ले लो, चाहे होली है या दिवाली या फिर जन्माशटमी, घटिया मनोरंजन, खाना पीने के सिवा कुछ नहीं रह गया ।

आर्य समाज के जाने माने विद्वान प्रवक्ता श्री महेश विद्यालंकार के शब्दों में ––– हमें जुलूस, लंगर, फोटो, माला, स्वागत सम्मान आदि में समस्त शक्ति, सोच, धन भाग दौड़ पूरी हो जाती है? कहीं भी आत्मचिन्तन, आत्मसुधार, बैचेनी, व्याकुलता और पीड़ा नजर नहीं आ रही है। यहीं पर्वों, उत्सवों, महासम्मेलनों तथा धार्मिक कार्यक्रमों की त्रासदी है। तत्काल कुछ समय प्रभाव, भाव–भावना व प्रेरणा रहती है। बाद को सब बराबर हो जाता है। इन बातों पर तत्काल गंभीरता से विचार – मन्थन करने की जरूरत है। जब तक जीवन में आर्यत्व, सत्याचरण, शुद्दता, पवित्रता, धार्मिकता आदि न होगा, तब तक दूसरों को आकर्षित व प्रभावित न कर सकेंगे। जलता हुआ दीया ही दूसरे दीये को जलाने में समर्थ होता है, बुझा दीया दूसरे को नहीं जला पाता है। जीवन से जीवन बनते और सुधारते हैं। आज हमारे जीवनों में धार्मिकता, आध्यात्मिकता, वैदिकता, प्रभुभक्ति स्वाध्याय, आत्मचिन्तन आदि तेजी से छूट रहे हैं? इसी कारण बर्हिजगत् में धूमधाम है, अन्तजगत् सुनसान अशान्त बैचेन तथा परेशान है।

ऐसे में वेद हमारे आचरण में कैसे आ सकते हैं। यदि हमने वेदों को अपने आचरण में लाना है तो हमें इसे अपनी भाषा मे ही समझ कर इसे दूसरों को उनकी भाषा में ही बताना होगा। बुद्विमान व्यक्ति वह होता हे जो दूसरों की भाषा में बात करने की कोशिश करता है, जब की हम अपनी ही भाषा में बात करने में फखर महसूस करते हैं। कहने का अभिप्राययह है कि मन्त्र रटने से या फिर मधुर वाणी में बोलने से कुछ नहीं होगा। चाहिये यह है कि हम चाहे हम वेद का एक मन्त्र ही चुन लें , परन्तु उसका अर्थ समझे, मनन करें और जीवन में धारण करें। जीवन को अच्छा मदाने के लिये विश्वानी देव सवित्र––––––मनत्र ही काफी है यदि हम अर्थ समझे, मनन करें और जीवन में धारण करें।

रजि. नं. : 4262/12

।। ओ३म् ।।

फोन : 94170-44481, 95010-84671

# महर्षि दयानन्द बाल आश्रम

मुख्य कार्यालय -1781, फेज़ 3बी-2, सैक्टर-60, मोहाली, चंडीगड़ - 160059
शाखा कार्यालय - 681, सैक्टर-4, नज़दीक गुरुद्वारा, मुंडीखरड़-मोहाली
आर्य समाज मंदिर, चंडीगढ़ व पंचकुला
E-mail : dayanandashram@yahoo.com, Website : www.dayanandbalashram.org

Mrs Sudesh Seth celebrated her grandson's birthday with slum children

धार्मिक माता/पिता 2100 प्रति माह
धार्मिक बहन/भाई 1500 प्रति माह
धार्मिक बन्धु 1000 प्रति माह
धार्मिक सखा 500 प्रति माह
धार्मिक सहयोगी 100 प्रति माह
धार्मिक साथी 50 प्रति माह

आप आर्थिक सहयोग देकर भी पुण्य के भागी बन सकते है :-

**A/c No. : 32434144307**
**Bank : SBI**
**IFSC Code : SBIN0001828**

All donations to this organization are exempted under section 80G

स्वर्गीय
श्रीमती शारदा देवी
सूद

## निमार्ण के 63 वर्ष

# गैस ऐसीडिटी शिमला का मशहूर कामधेनु जल

## (एक अनोखी आर्युवैदिक दवाई मुख्य स्थान जहां उपलब्ध है)

स्वर्गीय
डॉ0 भूपेन्दर नाथ गुप्त
सूद

Chandigarh-2691964, 5076448, 2615360, 2700987, 2708497, Manimajra-2739682, Panchkula 2580109, 2579090, 2571016, Mohali-2273123, 2212409, 2232276, Zirakpur-295108, Shimla- 2655644, Delhi-23344469, 27325636, 47041705, 27381489, Yamunanagar-232063, Dehradoon-2712022, Bhopal-2550773, 9425302317, Jaipur-2318554, Raipur-9425507000, Lucknow-2683019, Ranchi-09431941764, Guwhati-09864785009, 2634006, Meerut- 8923638010, Bikaner-2521148, Batala-240903, Gwaliyar-2332483, Surat-2490151, Jammu-2542205m, Gajiabad-2834062, Noida-2527981, Nagpur-9422108322, Ludhiana-2741889, 9915312526, Amritsar-2558543, Jallandhar-2227877, Ambala Cantt-4002178, Panipat-4006838, Agra-0941239552, Patiala-2360925, Bhatinda-2255790

**Medicine is available in other places also, Please contact us to know the name of the shop/dealer.**

शारदा फारमासियुटिकलज मकान 231ए सैक्टर 45–ए चण्डीगढ़ 160047

**0172-2662870, 92179 70381, E-mail : bhartsood@yahoo.co.in**

---

# जिन महानुभावो ने बाल आश्रम के लिए दान दिया

श्री संजीव गोयल

श्री सुकांत एवं श्रीमती कांता कांसल

श्री विनेय खन्ना

श्रीमती सुफी चावला

श्री अवनि गुप्ता

श्रीमती एवं श्री सागर अरोडा

श्रीमती सुदेश सेठ

श्री देवेन्द्र चैथले

# मजबूती में बे–मिसाल

## घर का निर्माण डीप्लास्ट के साथ

40 years in service

DIPLAST
PLASTICS LIMITED
AN ISO 9001 COMPANY

C-36, Industrial Phase 2, S.A.S. Nagar, Mohali (Pb.) India
Phone : +91-172-2272942, 5098187, Fax : +91-172-2225224
E-mail : diplastplastic@yahoo.com, Web : www.diplast.com

**QUALITY IS OUR STRENGTH**

## विज्ञापन / Advertisement

यह पत्रिका शिक्षित वर्ग के पास जाती है आप उपयुक्त वर–वधु की तलाश, प्रियजनों को श्रद्धा सुमन, अपने व्यापार को आगे ले जाने के लिये शुभ–अशुभ सूचना विज्ञापन द्वारा दे सकते है।

Half Page Rs. 250/- Full Page Rs. 500/-, 75 words Rs. 100/-

Contact : Bhartendu Sood, # 231, Sector 45-A, Chandigarh-160047
Tel.: 0172-2662870, Mob.: +91-9217970381
E-mail : bhartsood@yahoo.co.in